# हमारी कहानियां

एक सांझी पहल...

जुलाई, 2015
अंक : 2

भोपाल में आयोजित TAG मीटिंग में सांझी सेहत परियोजना के "हमारी कहानियां" मासिक न्यूज लेटर के विमोचन में उपस्थित अधिकारीगण, (बाएं से दाएं) डॉ. एस. कृष्णास्वामी (टीम लीडर एमपीटास्ट)श्री एल.एम.बेलवाल, (सीईओ, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन) सुश्री भावना (एकजुट संस्था) और डॉ. राजश्री बजाज (उप निदेशक, चाइल्ड हेल्थ)

साँझी सेहत परियोजना के 'हमारी कहानियां' कार्यक्रम का मासिक न्यूज लेटर

## सफर जारी है...

प्रिय साथियों,

'सांझी सेहत हमारी कहानियां' का सफर बदस्तूर जारी है। क्षेत्र में कार्य कर रहे हमारे सहजकर्ता माह में दो बैठकें लेते हैं। इन बैठकों में वे समुदाय के सदस्यों विशेषकर महिलाओं व किशोरियों को सेहत के प्रति जागरूक करने के निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

बैठकों में उनके प्रयास भी अब एक कदम आगे बढ़ गए हैं। सहजकर्ता अब माड्यूल के सत्रों के साथ समुदाय में आ रहे व्यावहारिक परिवर्तनों का आकलन भी चर्चा के माध्यम से करने लगे हैं।

परिणाम स्वरूप बैठकों में आनेवाली महिलाएं अब अपने अनुभव सबके सामने साझा करने लगी हैं। वे सगर्व बताती हैं कि उन्होंने स्वयं स्वास्थ्य केन्द्र जाकर गर्भावस्था में टीके लगवाए या सहजकर्ता की समझाइश के बाद परंपरा से हटकर शिशु को पहला दूध पिलाया। अनुभव साझा करते समय उनके चेहरे पर आई चमक बताती है कि यह परिवर्तन वे स्थायी रूप से स्वीकार कर चुकी हैं।

समुदाय के इन्हीं व्यवहार परिवर्तनों को सभी के साथ साझा करने के लिए "दीवार अखबार" की रूपरेखा बनाई गई है। इसे निर्मित करने का सहजकर्ताओं को बाकायदा प्रशिक्षण दिया गया है। अब समुदाय की महिलाएं अपने अनुभवों को सफलता की कहानी के रूप में लिखकर दीवार अखबार में सबके साथ साझा करेंगी।

इस नवाचार के बारे में अगले अंक में आपको विस्तृत जानकारी दी जाएगी। तो इंतजार करिए अगले अंक का, अनेक शुभकामनाओं सहित। ■

**डॉ. एस. कृष्णास्वामी**
**टीम लीडर, एमपी. टास्ट**

## चल पड़ी है एक लहर...

### समुदाय में उत्सव की तरह आयोजित की जाती हैं सामुदायिक बैठकें

सामुदायिक बैठकें सांझी सेहत परियोजना की नियमित और सतत् संचालित की जानेवाली गतिविधि है। DFID और राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के सहयोग से MPTAST द्वारा संचालित सांझी सेहत परियोजना प्रदेश के आठ जिलों में चल रही है। परियोजना के क्षेत्रीय स्तर पर कार्यरत सहजकर्ता समुदाय में बैठक कर स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण के मुद्दों पर सत्र लेकर जानकारी प्रदान करते हैं। इन बैठकों के माध्यम से न केवल स्वास्थ्य, स्वच्छता व पोषण संबंधी समुदाय में आए सकारात्मक परिवर्तनों का प्रचार हो रहा है, बल्कि लोगों में विचार अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास जैसे कौशलों का विकास भी हो रहा है। सामुदायिक बैठक सांझी सेहत की सहभागिता शिक्षण पद्धति के दस सत्रों के बाद आयोजित की जाती है।

सांझी सेहत परियोजना के माध्यम से प्रदेश के आठ जिलों में अब तक कुल 946 बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं। सागर जिले में सर्वाधिक 200 बैठकें हुई। इन बैठकों में हुई चर्चा से कुल 1,37,801 ( एक लाख सैंतीस हजार आठ सौ एक) लोग लाभान्वित हुए। लाभान्वितों में सर्वाधिक 66.40 प्रतिशत महिलाएं थीं जबकि पुरुषों की उपस्थिति 33.60 प्रतिशत रही।

डिंडोरी की सामुदायिक बैठक में बैगा नृत्य करते समुदाय के लोग

पेज 2 पर जारी...

# CRP उन्मुखीकरण हेतु रायसेन में एक दिवसीय बैठक

सहजकर्ताओं से चर्चारत एकजुट संस्था की सुश्री भावना।

किसी भी परियोजना के असल परिणाम उसके स्थायित्व में ही निहित होते हैं। सांझी सेहत परियोजना में भी यही प्रयास किए जा रहे हैं कि समुदाय में व्यवहार परिवर्तन एक आदत के रूप में स्थायित्व पा सके। परियोजना के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने व उनके व्यवस्थित क्रियान्वयन हेतु समुदाय की जागरूक, सक्रिय व समर्पित महिलाओं का चिन्हांकन CRP यानी सामुदायिक सेवा प्रदाता के रूप में किया गया है। ये महिलाएं स्वयंसेवी के रूप में परियोजना से जुड़ी हैं जो समुदाय एवं परियोजना के बीच मजबूत कड़ी की भूमिका निभाती है। ये PLA तथा सामुदायिक बैठकों की सूचना प्रत्येक ग्रामवासी तक पहुंचाने, बैठक के दिन उन्हें प्रेरित कर बैठक स्थल तक लाने का महत्वपूर्ण कार्य बखूबी कर रही हैं। CRPS को अपने कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु सक्षम बनाने के लिए एक दिवसीय कार्यक्रम 7 जुलाई 2015 को रायसेन जिले के सिलवानी विकासखंड में किया गया। इसमें सांझी सेहत के जिला नोडल अधिकारी श्री सुरेन्द्र त्रिपाठी, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से श्री प्रदीप दीक्षित, MPTAST से श्री एस.बाकर, एकजुट संस्था से भावना, जिला समन्वयक राधिका शर्मा, जिला लेखापाल योगेश नागर, PFT समन्वयक चंद्रप्रकाश मौर्य, मनीष त्रिपाठी, विक्रम जैन सहित जिले के समस्त सहजकर्ता उपस्थित थे।

श्री एस.एम. बाकर ने सहजकर्ताओं को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि 'सहजकर्ताओं का CRP महिलाओं से संबंध उन्हें एकत्र करने का नहीं बल्कि परियोजना से लंबे समय तक जुड़ाव का होना चाहिए। समुदाय में व्यवहार परिवर्तनों के स्थायित्व के लिए जरूरी है कि CRP महिलाएं सतत मॉनिटरिंग करती रहें।' सुश्री भावना ने सभी प्रतिभगियों को पांच समूहों में विभाजित कर समूह कार्य दिया। प्रत्येक समूह ने एक सत्र प्रस्तुतिकरण हेतु तैयार किया। ■

प्रथम पृष्ठ शेष..

सामुदायिक बैठकों का मुख्य उद्देश्य PLA सत्र के दौरान लक्षित समूह के शेष रह गए सदस्यों जैसे महिलाओं, किशोरियों, पुरुषों व समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ व्यवहार परिवर्तनों को साझा करना, समुदाय की समस्याओं को जानना, उनके सुझावों और उनके अनुभवों को सुनना तथा व्यावहारिक परिवर्तनों के स्थायित्व हेतु प्रयास करना है। बैठक में जहां सांझी सेहत के मुद्दों जैसे स्वास्थ्य, स्वच्छता व पोषण की जानकारी दी जाती है। वहीं, समुदाय के सदस्यों की समस्याओं और सुझाव पर भी ध्यान दिया जाता है। साथ ही समस्या समाधान के उपाय भी किए जाते हैं। इसी श्रृंखला में अब तक आठ जिलों से कुल 46245 शौचालयों की मांग स्वीकृत की गई और इनमें 4464 शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है। शेष स्थानों पर निर्माण प्रक्रिया जारी है। इन सामुदायिक बैठकों में समुदाय के सदस्यों के अतिरिक्त विभागीय प्रतिनिधि के रूप में स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, शिक्षा विभाग, DPIP व अन्य शासकीय विभागों के अधिकारी व कर्मचारी शामिल हुए। इनकी सहभागिता से बैठक की गरिमा में वृद्धि हुई। जब समुदाय एवं सेवा प्रदाता एक साथ बैठते हैं तो सेवाओं की मांग व पूर्ति, समस्याएं एवं सुझाव तथा अपेक्षित सहयोग आसानी से प्राप्त होते हैं। ■

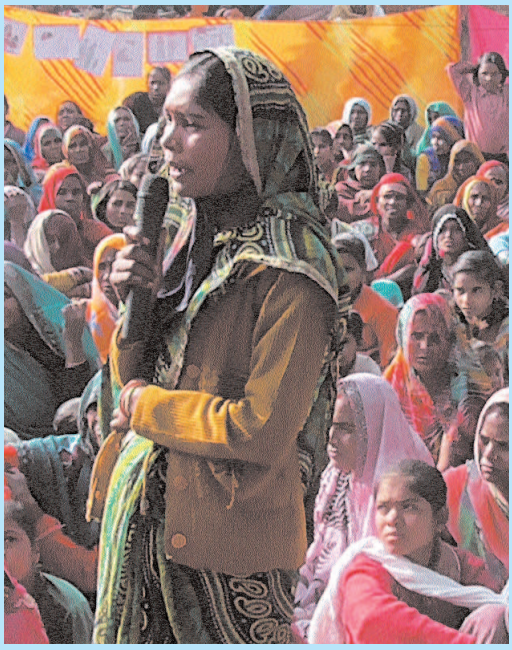

छतरपुर की सामुदायिक बैठक में महिलाओं ने बढ़चढ़ कर अपनी प्रस्तुतियां दी।

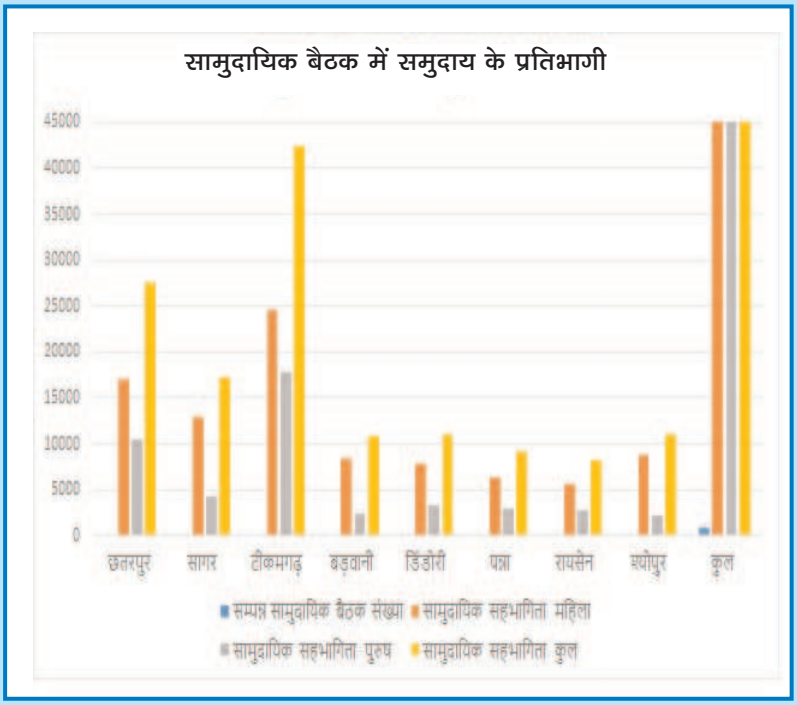

# सांझी सेहत–हमारी कहानियां

## 24 दिनों में 8 जिलों के कार्यकर्ताओं का आवासीय प्रशिक्षण संपन्न

15 मई 2015 से सांझी सेहत परियोजना में एक नया अध्याय "सांझी सेहत – हमारी कहानियां" भी जोड़ा गया है। सांझी सेहत हमारी कहानियां के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी राज्य संसाधन केन्द्र, इंदौर को दी गई है। राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा 23 जून से 16 जुलाई 2015 तक आयोजित प्रशिक्षणों में 24 दिनों में 8 जिलों के कुल 207 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर पिछले तीस वर्षों से प्रदेश के विभिन्न जिलों में साक्षरता संबंधी तकनीकी सहयोग व मार्गदर्शन देता रहा है। सांझी सेहत के साथ हमारी कहानियां जोड़ने का मुख्य उद्देश्य सांझी सेहत परियोजना के माध्यम से समुदाय में आए स्वास्थ्य, स्वच्छता व पोषण संबंधी सकारात्मक व्यवहार परिवर्तनों का अभिलेखन करना और उन्हें ग्राम स्तर से लेकर जिला तथा प्रदेश स्तर तक पहुंचाना है।

'सांझी सेहत हमारी कहानियां' के क्रियान्वयन के लिए केंद्र द्वारा 8 जिलों के सहजकर्ताओं , संकुल व जिला समन्वयकों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किए गए। ये तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण थे जिनका आयोजन जिला मुख्यालयों पर किया गया। प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में राज्य संसाधन केंद्र के स्त्रोत व्यक्तियों के अतिरिक्त डॉ. स्मिता तिवारी (परामर्शदाता) क्षेत्र प्रशिक्षण केंद्र स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, शबनम वर्मा (दक्षता संवर्धन समन्वयक)शहरी स्वास्थ्य एवं संसाधन केंद्र, राजेन्द्र बंधु (स्वतंत्र पत्रकार), ओ.पी. सोनी (फोटोग्राफर) एवं राज्य ग्राम आजीविका मिशन से श्री रामकृष्ण यादव ने भी विषय विशेषज्ञ के रूप में सत्र लिए। स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा गतिविधि आधारित प्रतिभागिता पूर्ण प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के अंत में सभी सहजकर्ताओं को क्षेत्र में दीवार अखबार बनाने के लिए ग्रामों की संख्या के अनुसार शीट स्केच पेन, रबर, पेंसिल व स्केल दिए गए। जिससे वे समुदाय में समूह में दीवार अखबार बनाकर उसका उपयोग कर सकें। ■

बड़वानी के प्रतिभागी प्रशिक्षण के दौरान।

## प्रशिक्षण की मुख्य विषयवस्तु

- सांझी सेहत हमारी कहानियां की अवधारणा एवं उद्देश्यों की समझ विकसित करना।
- अभिलेखन का महत्व और प्रकार।
- संचार कौशल व संचार के माध्यमों को जानना।
- समुदाय में आए सकारात्मक व्यवहार परिवर्तनों को सफलता की कहानी के रूप में लिखना।
- घटना, समाचार लेखन कौशल विकसित करना।
- दीवार अखबार का परिचय ,उद्देश्य व तकनीक।
- सरलीकरण कौशल ।
- साक्षात्कार लेने की तकनीक ।
- अच्छी फोटो खींचने की तकनीक।

छतरपुर के प्रतिभागियों द्वारा दीवार अखबार का प्रस्तुतीकरण।

**प्रशिक्षणों का ब्यौरा**

| जिला | जिला समन्वयक | कलस्टर समन्वयक | सहजकर्ता | जिला लेखापाल/ कम्प्यूटर आपरेटर | कुल प्रतिभागी |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. बड़वानी | 1 | 2 | 22 | 1 | 26 |
| 2 .रायसेन | 1 | 3 | 15 | 1 | 20 |
| 3. टीकमगढ़ | 1 | 6 | 28 | 1 | 36 |
| 4. छतरपुर | 1 | 7 | 21 | 1 | 30 |
| 5. सागर | 1 | 5 | 24 | 1 | 31 |
| 6. पन्ना | 1 | 4 | 19 | 1 | 25 |
| 7. श्योपुर | 1 | 4 | 19 | 1 | 25 |
| 8. डिंडोरी | 1 | 3 | 9 | 1 | 14 |

# संघर्ष से सफलता की ओर

सावित्री, विनीताबाई, पदम और अन्य लोग बीमारियों से बचाव हेतु समूह कार्य करते हुए।

रायसेन जिले की तहसील सिलवानी से लगभग 30 किमी. दूर स्थित है गांव छींद। कुछ आदिवासी परिवार गांव से एक कि.मी. दूर स्थित टोले में रहते हैं। टोले में नालियां व पक्की सड़क न होने से बरसात के दिनों में जल जमाव हो जाता था। भरे हुए पानी की वजह से आने-जाने में तो परेशानी होती थी, साथ ही मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियां भी फैलती थीं, जिससे पूरा गांव परेशान रहता था। सावित्रीबाई भी अपने परिवार के साथ उसी टोले में रहती है। वह हर बारिश में लोगों को मलेरिया से जूझते हुए देखती और परेशान रहती थी, लेकिन कुछ कर नहीं पाती थी। फिर वह गांव में सांझी सेहत परियोजना की बैठकों में जाने लगी। वहां उसे रुके हुए साफ पानी में पनपने वाले मच्छरों और बीमारियों की जानकारी हुई। परियोजना की पहली बैठक में निर्भयता का खेल खिलाया गया, तब सावित्री को लगा गांव की समस्याएं उन्हें खुद हल करनी चाहिए। उसने गांव के अन्य लोगों से गड्ढे भरने हेतु सहायता मांगी, तब विनीताबाई और पदम के साथ गांव के कुछ लोग आगे आए। पदम अपनी बैलगाड़ी से गिट्टी, मुरम और पत्थर लाया। सवित्री ने अन्य लोगों के साथ मिलकर उसे पूरे गांव के गड्ढों में फैला दिया। अब गांव में कीचड़, मच्छरों की समस्या बहुत कम हो गई है। सावित्री के इस कार्य की पूरे गांव में सराहना की जा रही है। ■



# तिरंगे भोजन का महत्व बताया

भजनसिंह अहिरवार
सहजकर्ता

सांझी सेहत परियोजना की 12 वीं PLA बैठक डिंडोरी जिले के समनापुर ब्लॉक के बुड़रूखी तालाब टोला में 22 जुलाई 2015 को संपन्न हुई। बैठक में सहजकर्ता भजनसिंह अहिरवार ने समुदाय की महिलाओं को सही पोषाहार के बारे में अत्यंत उपयोगी जानकारी दी। बैठक में समुदाय की महिलाएं अपने घरों से विभिन्न प्रकार की कच्ची भोज्य सामग्री लेकर आई थीं। सहजकर्ता ने उन्हें 4 समूहों में विभाजित कर अलग-अलग प्रकार के भोजन के बारे में समझाया, रोगों से लड़ने वाले आहार,विकास में सहायक आहार, ऊर्जा देने वाले आहार तथा रेशेदार आहार। बैठक में उपस्थित अंजनी समूह की अध्यक्ष संतोषी ठाकुर ने कहा, 'यदि हम तिरंगे के तीन रंगों को ध्यान में रखकर भोजन बनाते हैं, लाल (लाल फल, मसूर, गाजर, टमाटर, चुकंदर, मूंगफली, मांस, मछली,) हरा (हरी सब्जियां, मूंगदाल, फलियां, नींबू, आंवला) और सफेद (दूध और दूध से बने पदार्थ, चावल, गेहूं, चना, सोयाबीन)तभी हमारा भोजन पौष्टिक कहलाएगा' । बैठक में गर्भवती, धात्री माताओं सहित 66 महिलाएं उपस्थित थीं। यह जानकारी सांझी सेहत परियोजना की संकुल समन्वयक निक्की वैष्णव ने दी। ■

बैठक में आहार समूहों को समझती महिलाएं।

# PLA सत्र में स्वास्थ्य कार्यकर्ता की सक्रिय भूमिका

बैठक में चर्चारत समुदाय के प्रतिभागी व अन्य।

ग्राम पंचायत चिरचिटा ब्लॉक देवरी-जिला सागर में PLA बैठक क्र.19 का विषय सुरक्षित गर्भपात था। इसमें ANM आभा मिश्रा, समन्वयक मनीष पयासी तथा सहजकर्ता मोनिका पयासी ने समुदाय की महिलाओं से सुरक्षित गर्भपात पर चर्चा की। आभा मिश्रा ने बताया कि, सुरक्षित गर्भपात कितने हफ्ते के भीतर करवाना, किससे करवाना तथा कहां करवाना चाहिए। उन्होंने कहा कि असुरक्षित तरीके से गर्भपात कराने से गर्भवती की जान को खतरा हो सकता है, अत: गर्भपात हमेशा स्वास्थ्य केन्द्रों में तथा मान्यता प्राप्त चिकित्सक के हाथों ही करवाना चाहिए। उन्होंने सांझी सेहत परियोजना की सराहना कर सहजकर्ता को धन्यवाद दिया और कहा कि, 'आपकी परियोजना के चलते ग्रामीण समुदाय में स्वास्थ्य, पोषण व स्वच्छता को लेकर अच्छी समझ विकसित हो रही है, जिससे हमारे स्वास्थ्य केन्द्रों में टीकाकरण, संस्थागत प्रसव तथा बीमारियों के इलाज के लिए ज्यादा लोग आने लगे हैं।' बैठक में समुदाय की 6 गर्भवती, 7 धात्री माताएं तथा 25 नवयुवतियों सहित अन्य महिलाएं उपस्थित थीं। ■

आभा मिश्रा
ANM



# गर्भवती एवं नवजात की देखभाल के बारे में जाना

जच्चा-बच्चा कार्ड के माध्यम से जानकारी लेती महिलाएं।

बड़वानी जिले के ग्राम लिंगवा में सांझी सेहत परियोजना के तहत आयोजित 11 वीं PLA बैठक दिनांक 17 जुलाई 2015 को हुई। बैठक में चित्रकार्ड के माध्यम से गर्भावस्था में गर्भवती की देखभाल, आंगनवाड़ी में पंजीयन, निश्चय किट का उपयोग, जच्चा-बच्चा कार्ड का महत्व, नवजात की कंगारू मदर केयर, बच्चे को गर्मी देने के लिए कपड़े में कैसे लपेटे। आदि विषयों पर समुदाय की महिलाओं को उपयोगी जानकारियां दी गई।

रेवा डावर
ANM

**बैठक में महिलाओं ने कुछ प्रश्न किए जो इस प्रकार थे-**

1. क्या कंगारू केयर घर का कोई अन्य सदस्य जैसे, बच्चे का पिता भी दे सकता है?
2. अगर हम डिलीवरी अस्पताल में करवाते हैं तो क्या-क्या फायदे होंगे? कौन-कौन सी सरकारी सुविधाएं मिलेंगी?

इस मीटिंग में 5-6 गर्भवती एवं धात्री महिलाएं नहीं आ पाई थीं उनसे गृह भेंट की गई उसके पश्चात् संकुल समन्वयक (सांझी सेहत परियोजना) रानू शर्मा ने गृह भेंट की और सत्र की उपयोगी जानकारी से उन्हें अवगत कराया गया। इस बैठक में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से मनी राठौर, सहजकर्ता शकुंतला गोरे, ANM रेवा डावर, आशा सहयोगिनी अनिता साहू एवं समुदाय से गर्भवती, धात्री माताओं, किशोरी बालिकाओं सहित 65 महिलाएं उपस्थित थीं। ■

# किशोरियों ने शुरू किया सेनेटरी नेपकीन का उपयोग

ग्राम जखरोन की किशोरियां खेल खेलती हुई।

छतरपुर जिले के ग्राम जखरोन कला में सांझी सेहत परियोजना की बैठक में माहवारी के दौरान स्वच्छता, सावधानी तथा पोषण विषय पर चर्चा हुई। बैठक में महिलाओं के साथ किशोरियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। किशोरियों ने बताया कि उन्हें पहले माहवारी के दौरान स्वच्छता, पोषण, सावधानी तथा सेनेटरी नेपकीन के बारे में जानकारी नहीं थी। इस वजह से उन्हें संक्रमण, मानसिक तनाव तथा कमजोरी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। बैठक में किशोरियों ने माहवारी के अनुभव, माहवारी के दौरान सामाजिक रोक-टोक, प्रचलित भ्रांतियों एवं अंधविश्वासों पर खुलकर चर्चा की। तीन स - ''साफ, सूती, सूखा कपड़ा'' पर भी किशोरियों की समझ विकसित हुई। जिन बातों को किशोरियां अपने घर परिवार में साझा नहीं कर सकती थी, उन पर बैठकों में आसानी से बातें कर पाती हैं। अपने प्रश्नों के समाधान कारक उत्तर मिलने से उनकी समस्याओं में कमी आने लगी है। आशा कार्यकर्ता द्वारा जबसे उन्हें सेनेटरी नेपकीन के बारे में जानकारी मिली है, वे DPIP परियोजना द्वारा निर्मित सेनेटरी नेपकीन ग्राम उत्थान समिति से बहुत कम दरों (5 पेड 16 रुपए तथा 8 पेड 20 रुपए) में खरीदने लगी हैं। साथ ही अपनी सहेलियों को भी सेनेटरी नेपकीन के बारे में बताने लगी हैं। क्षेत्र में सेनेटरी नेपकीन खरीदने वाली महिलाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। बैठक में महिलाओं के साथ 7 किशोरियां उपस्थित थीं। ■



# सहजकर्ता की सजगता से रुका बाल विवाह

15 वर्षीय सरोज अहिरवार टीकमगढ़ जिले के ब्लॉक मुख्यालय से 15 किमी. की दूरी पर ग्राम पंचायत देवीनगर राजस्व ग्राम बैसाऊगढ़ में रहती है। सरोज सांझी सेहत परियोजना की सहभागी सीख कार्यवाही की सभी बैठकों में नियमित रूप से जाती है। बैठक क्रमांक 3 में जब सहजकर्ता रामरती रायकवार चित्र कार्ड द्वारा कुपोषण चक्र समझा रही थी, सरोज उसे बहुत ध्यान से सुन रही थी।

रामरती रायकवार
सहजकर्ता

रामरती ने बताया कम उम्र में शादी करने व गर्भधारण करने से कुपोषण पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। यह बात सरोज ने अपने मन में उतार ली तथा निश्चय किया कि वह स्नातक तक पढ़ाई पूरी करने के बाद ही शादी करेगी। इधर सरोज के पिता उसकी शादी की बात चला रहे थे। एक दिन वे सरोज के लिए रिश्ता लेकर आए। सरोज ने पिता के सामने अपने मन की बात रखी तथा कहा कि मैं अभी शादी नहीं करूंगी, लेकिन उसके पिता शादी करने पर अड़े रहे। सरोज ने यह बात सहजकर्ता रामरती को बताई।

रामरती सरोज के घर गई तथा उन्हें अभी सरोज की शादी नहीं करने की सलाह दी, लेकिन वे नहीं माने। रामरती ने हौसला नहीं खोया। वह 2-4 दिन में सरोज के घर जाकर उसके पिता को बाल विवाह के दुष्परिणामों तथा बाल विवाह संबंधी कानून के बारे में बताती रहती थी। सरोज तथा घर के अन्य सदस्य भी उसके पिता को मनाने में लगे रहे। अंतत: सरोज के पिता मान गए। सरोज अब बहुत खुश है। रामरती ग्राम के अन्य लोगों को भी बाल विवाह के दुष्परिणामों से अवगत कराने लगी है। ■

सरोज अपने पिता कन्नूलाल अहिरवार के साथ।

# दूर हुई पेयजल समस्या

पटोदा गांव मध्यप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित है। यह स्थान श्योपुर जिले के कराह ब्लॉक से 40 किमी. दूर स्थित है। पटोदा गांव की सबसे बड़ी समस्या पेयजल का संकट है। इस गांव में पानी का एक ही कुआं है। सब महिलाएं इसी कुएं से पानी भरती हैं। हालांकि इस कुएं का पानी शुद्ध नहीं है पर पानी भरती हैं। हालांकि इस कुएं का पानी शुद्ध नहीं है पर महिलाओं के सामने कोई विकल्प नहीं था। गांव में गंदगी और बीमारियां फैली थीं। पर मजबूरी में सब उसी कुएं के पानी का उपयोग करते थे।

इस गांव में पानी का एक ही कुआं है। सब महिलाएं इसी कुएं से पानी भरती हैं। हालांकि इस कुएं का पानी शुद्ध नहीं है पर पानी भरती हैं। हालांकि इस कुएं का पानी शुद्ध नहीं है पर महिलाओं के सामने कोई विकल्प नहीं था।

गांव में सांझी सेहत की बैठकें शुरू हुई। आठवीं बैठक में गंदगी और उससे होने वाली विभिन्नि बीमारियों के बारे में बताया गया। महिलाओं की इस बारे में समझ बनी। सबकी सहमति से एक रैली पंचायत सचिव के घर तक निकाली। फिर पंचायत सचिव को गांव की समस्या से अवगत कराया। उन्हें बताया कि इस पानी के उपयोग से उल्टी-दस्त जैसी बीमारियां हो रही हैं। जगह-जगह गंदगी हो रही है महिलाओं की इस पहल का सकारात्मक परिणाम निकला। पंचायत सचिव ने गांव में वर्षों से खराब पड़े ट्यूबवेल की मरम्मत कराई। हैंडपंप चालू होने से महिलाओं की परेशानी दूर हुई।

सांझी सेहत की बैठकों ने महिलाओं में जागरूकता फैलाई और सबसे प्रयासों से पानी की समस्या हल हुई। अब गांव में सबको शुद्ध पेयजल मिलता है। इससे बीमारियां कम हुई। गंदगी भी नजर नहीं आती है। ■

## बैठकों से मिली प्रेरणा

कानरखेड़ा गांव आदिवासी बहुल गांव की श्रेणी में आता है। यह श्योपुर जिले के कराहल ब्लॉक से 21 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां के क्लस्टर में सांझी सेहत की बैठकें नियमित रूप से होती हैं।

बैठक के दौरान आपस में चर्चा करती महिलाएं।

शुरू-शुरू में सीआरपी और सहजकर्ता को महिलाओं के बैठकों में लाने में बहुत दिक्कतें हुई। गांव की महिलाएं बैठक में आने से मना कर देती थीं। सहजकर्ता से बात भी नहीं करती थीं। अधिक जोर देने पर कहती थीं, हमें बैठक में आने से क्या लाभ होगा? पर सहजकर्ता ने समझाइश देना नहीं छोड़ा। बैठकें नियमित होती रहीं। धीरे-धीरे बैठकों में महिलाओं की संख्या बढ़ने लगी। अब महिलाएं बैठकों में जानकारी लेतीं। वे बैठकों के महत्व को समझने लगीं। इनमें से एक महिला थी आशावती। जो आदिवासी थी। उसने प्रथम गर्भधारण के समय किसी तरह की जांच नहीं कराई थी। पर सांझी सेहत कीबैठक 2 व 3 में गर्भधारण के दौरान जांच कराने संबंधी जानकारी दी गई। तब उसकी समझ बनी। उसने अगले गर्भ के समय आरंभ में ही रजिस्ट्रेशन करवाया। सभी जांचे करवाईं। टीके लगवाए और पोषण आहार भी लिया। परिणाम स्वरूप अस्पताल में प्रसव के दौरान उसने स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। आशावती कहती है, सांझी सेहत की जानकारी से उसकी और उसके बच्चे की सेहत बनी। ■

## सांझी सेहत हमारी कहानियां एवं दीवार अखबार बनाने हेतु दिए गए प्रशिक्षणों के दौरान प्रतिभागियों के विचार कुछ इस प्रकार रहे-



तीन दिवसीय प्रशिक्षण पूर्णरूप से सफल रहा, प्रशिक्षण की रूपरेखा के अनुरूप हमें दीवार अखबार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुई ये हमारे लिए भविष्य में भी बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

**लवदीप सिंह, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **(पन्ना)**

मुझे ट्रेनिंग में आकर सफलता की कहानी लेखन का महत्व, उपयोगिता एवं तरीकों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। इससे मेरे लेखन में सुधार हो रहा है। दीवार अखबार के बारे में भी उपयोगी जानकारी मिली है।

**योगेश नागर, DACO**
सांझी सेहत परियोजना **(रायसेन)**

दीवार अखवबार एवं सामान्य अखबार में अंतर समझ आया। संचार माध्यमों की उपयोगिता तथा महत्व का पता चला। कहानी लेखन विधा के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई हैं।

**उमाशंकर रिछारिया, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **(छतरपुर)**

ट्रेनिंग में जिस प्रकार से संचार माध्यम का महत्व तथा उपयोगिता बताई गई। उससे बहुत सी उपयोगी जानकारी मिली। फोटो खींचने का सही तरीका पता चला। अन्य कई उपयोगी जानकारियां भी प्राप्त हुई है।

**यतेन्द्र गुप्ता, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **(बड़वानी)**

समाचार लेखन में 6 ककार कब, क्यों,कैसे, कहां, कौन, कितने, की समझ विकसित हुई। प्रशिक्षण कार्यशाला में आने से समाचार लेखन एवं कहानी लेखन में सुधार आया।

**संतोष कुमार भारती, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **(श्योपुर)**

तीन दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों ने बहुत ही कम समय में उपयोगी व महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की है, जो कि हमारे कार्यों के दस्तावेजीकरण में उपयोगी सिद्ध हो रही है।

**बरुण राऊत, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **(टीकमगढ़)**

ट्रेनिंग में सफलता की कहानी लेखन, उसका महत्व, उपयोगिता एवं लेखन के विभिन्न तरीकों के बारे में बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। 6 ककारों के बारे में पहले पता नहीं था। प्रशिक्षण में इस बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली है।

**पुष्पेन्द्र सिंह, जिला समन्वयक**
सांझी सेहत परियोजना **डिंडोरी**

प्रशिक्षण में आकर दीवार अखबार, कहानी लेखन, साक्षात्कार एवं फोटो लेने के सही तरीकों के बारे में पता चला। प्रशिक्षण के बाद मैं कहानी लेखन एवं अखबार लेखन सही तरीके से कर पा रही हूं।

**मोनिका पयासी, सहजकर्ता**
सांझी सेहत परियोजना **(सागर)**

न्यूज लेटर के संबंध में आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा। संपर्क का पता–

**email: sanjhivartamp@gmail.com**

साक्षर भारत

fhi360 THE SCIENCE OF IMPROVING LIVES

MPHSRP MPTAST

UKaid from the British people

**डीएफआईडी और राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा एमपीटास्ट के लिए राज्य संसाधन केन्द्र, इंदौर द्वारा निर्मित**

ऑनलाईन न्यूज़लेटर www.srcindore.com एवं www.sanjhisehat.org पर पढ़ सकते हैं।

**मार्गदर्शन** - रचना सिंह, सुपर्णा सरकार, अंजली अग्रवाल, **संपादन**- सीमा व्यास, सुषमा दुबे **सहयोग**-निलेश शिंदे, ऋचा अग्रवाल **ग्राफिक्स**-असरार खान